



कोवडि-19 का पुनः संक्रमण

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद्](#) (Indian Council of Medical Research- ICMR) के वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा 1,300 ऐसे व्यक्तियों के मामलों की जाँच की गई है जो दो बार कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं।

- जाँच में पाया गया कि 1,300 लोगों में से 58 अर्थात् 4.5 प्रतिशत लोग कोरोना से दोबारा संक्रमित हुए।

प्रमुख बद्धि:

• पुनः संक्रमण के वैश्विक मामले:

- पुनः संक्रमण के पहले मामले की पुष्टि हॉन्गकॉन्ग में की गई।
- अमेरिका और बेलजियम में भी कुछ मामले सामने आए।
- हालाँकि भारत में भी कई ऐसे मामले सामने आए हैं जिनमें लोगों का कोरोना टेस्ट कई बार पॉज़िटिव आया परंतु ऐसे मामलों को कोरोना के केस में शामिल नहीं किया जा सकता है।
 - इस प्रकार के मामले परसिस्टेंट वायरल शेडिंग (Persistent Viral Shedding) का परिणाम है। वायरल शेडिंग से तात्पर्य शरीर में वायरस के वसितार से होता है।

परसिस्टेंट वायरल शेडिंग:

- जब कोई व्यक्ति SARS-CoV-2 जैसे श्वसन वायरस (Respiratory Virus) से संक्रमित हो जाता है तो वायरस के कण वभिन्न प्रकार के वायरल रसिप्टर (Viral Receptor) के साथ बँधे होते हैं।
- कोरोना वायरस से ठीक होने वाले लोगों में कोरोना के नमिन स्तर के वायरस कम-से-कम तीन महीने तक रह सकते हैं।
- इस नमिन स्तर के वायरस में दूसरों को बीमार करने और संक्रमित कर देने की सीमिति क्षमता ही होती है। इस वायरस का पता डायग्नोस्टिक टेस्ट के माध्यम से लगाया जा सकता है।
- इस प्रकार लगातार वायरस से वकिसति होने वाली बीमारी को परसिस्टेंट वायरल शेडिंग कहा जाता है।

• पुनः संक्रमण के अध्ययन का महत्त्व:

- यह स्पष्ट करना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है कि एक व्यक्ति जो एक बार संक्रमित हो चुका है क्या उसके द्वारा बीमारी के खिलाफ स्थायी प्रतिरक्षा वकिसति की जा चुकी है या वह कुछ समय बाद पुनः संक्रमित होता है।
 - पुनः संक्रमित होने की संभावना के प्रति समझ कोवडि-19 महामारी (Covid-19 Pandemic) का मुकाबला करने में महत्त्वपूर्ण हो सकती है।
- यह बीमारी के प्रसार को नियंत्रित करने हेतु आवश्यक रणनीतिक हस्तक्षेप के निर्धारण में सहायक होगा।
- यह इस बात का आकलन करने में भी मदद करेगा कि कब तक लोगों को मास्क का उपयोग और शारीरिक दूरी के नियमों का पालन करना होगा।
- इसका प्रभाव टीकाकरण की रफ्तार पर भी देखने को मलिया।

• पुनः संक्रमण का निर्धारण:

- पुनः संक्रमण की पुष्टि हेतु वैज्ञानिकों द्वारा वायरस के नमूने का जीनोम अनुक्रम विश्लेषण (Genome sequence analysis) किया

गया।

- क्यौंका वायरस में लगातार उत्परिवर्तन की क्रिया होती रहती है। दो नमूनों के जीनोम अनुक्रमों में कुछ अंतर वदियमान होता है।
- हालाँका जीनोम वशिलेषण हेतु प्रत्येक संक्रमति व्यक्ता से वायरस के नमूने एकत्र नहीं कयि गए हैं।
- आमतौर पर अधकिंश मामलों में पछिले संक्रमण का कोई जीनोम अनुक्रम नहीं देखा गया, जससे तुलना की जा सके।
- इस प्रकार ICMR के वैजज्ञानकिों द्वारा अपने अध्ययन में उन मामलों को शामिल कयिा गया जनिमें रोगी 102 दनों के भीतर कम-से-कम दो बार संक्रमति हुए थे लेकनि इस प्रकार के संक्रमण को परससिंटेंट वायरल शेडगि में शामिल नहीं कयिा जाएगा।
- सेंटर फॉर डज़िज़ कंट्रोल (Centers for Disease Control- CDC) के अनुसार, वायरल शेडगि में लगभग 90 दनों का समय लगता है।

• पुनः संक्रमण के लक्षणः

- पुनः संक्रमण की मध्यावध में अधकिंश रोगयिों में वायरस का कोई लक्षण नहीं दरिखाई देता है, हालाँका कुछ रोगयिों द्वारा हलके लक्षणों की पुष्टि की गई है।
- कुछ लक्षणों में रुक-रुक कर बुखार आना, खँसी या साँस लेने में तकलीफ आदि शामिल हैं।

• पुनः संक्रमण का नहितारथः

- पुनः संक्रमण के कारण स्थायी प्रतरिक्षा (Permanent Immunity) प्रणाली को वकिसति नहीं कयिा जा सकता है।
- यदप्रत्येक संक्रमति व्यक्ता के जीनोम का वशिलेषण करना संभव हो तो पुनः संक्रमण की पुष्टिसही तरीके से की जा सकती है।
- यदपुनः संक्रमण के मामलों की पुष्टि हो जाती है तो मास्क का प्रयोग और सोशल डिस्टेंसिग जैसे उपाय सभी लोगों के लयि सामान्य हो जाएंगे।

भारतीय चकित्सा अनुसंधान परषिदः

- भारतीय आयुर्वज्ज्ञान अनुसंधान परषिद (ICMR) जैव चकित्सा अनुसंधान के नरिमाण, समन्वय एवं संवर्द्धन हेतु भारत का शीर्ष नकिया है।
- ICMR द्वारा जारी अधदिश समाज के लाभ हेतु चकित्सा अनुसंधान का संचालन, समन्वय और कार्यान्वयन करना है जो उत्पादों/प्रक्रयिओं में चकित्सा नवाचारों का अनुवाद कर उन्हें सार्वजनकि स्वास्थ्य प्रणाली में शामिल करता है।
- यह भारत सरकार द्वारा स्वास्थ्य अनुसंधान वभिाग, स्वास्थ्य और परवार कल्याण मंत्रालय के माध्यम से वतितपोषति है।

स्रोतः इंडयिन एक्सप्रेस